Date: ______ Page No.: ______

Social development

Q. Explain the different stages of social development of children.
बच्चों के होनेवाले सामाजिक विकास के विभिन्न स्तरों का वर्णन करें।

Ans— सामाजिक विकास वह प्रक्रिया है जो बालक के जीवन में जन्म से मृत्युपर्यन्त निरंतर किसी रूप में चलती रहती है। सामाजिक विकास की गति प्रारंभिक अवस्थाओं में तीव्र होती है। विभिन्न अवस्थाओं में होने वाले सामाजिक विकास का संक्षेप में इस प्रकार से वर्णन किया गया है—

(1) Social development in Infancy (शैशवावस्था में सामाजिक विकास)

शैशवावस्था का समय प्रायः जन्म से दो वर्ष तक होता है। जिस समय शिशु इस भौतिक संसार में जन्म लेता है, वह इस समय न तो सामाजिक होता है, और न ही असामाजिक। अर्थात् बच्चा पूर्णतया समाज निरपेक्ष जीव होता है। जन्म से दो माह के अन्त तक शिशु केवल संवेदनात्मक एवं शारीरिक (Sensory and Phy-sical) activities करता है। आयु वृद्धि के साथ-साथ बालक सामाजिक प्रतिक्रियाएँ करने लगता है। तीन माह की अवस्था का लगभग शिशु अपनी माँ के अतिरिक्त परिवार के अन्य लोगों के प्रति अनुक्रिया करने लगता है। रोने, मुस्कुराने, सिर घुमाने की क्रियाओं के द्वारा शिशु दूसरे लोगों का ध्यान आकर्षित करने लगता है। 5 माह के शिशु द्वारा आवाज के प्रति जिज्ञासा होना, अकेले रहने पर रोना, एवं अन्य वस्तुओं पर ध्यान देखना, सामाजिक अनुक्रिया के प्रतीक होते हैं। अध्ययनों से यह स्पष्ट किया गया है कि तीन सप्ताह में केवल 20% शिशुओं में मुस्कुराने की क्रिया पायी जाती है जबकि 5 माह में 98% शिशुओं में मुस्कुराने की क्रिया पायी जाती है। इस आयु का शिशु दूसरे व्यक्तियों के बुलाने पर शांत हो जाता है, और भीड़-भाड़ होने पर बेचैनी का अनुभव करता है। 4-5 महीने का शिशु अन्य बालकों को देखकर मुस्कुराता है। 10 माह का शिशु सामाजिक

सम्बन्ध की प्रथम इच्छा प्रकट करता है। बालक के हँसना, जोर-जोर से हाथ व पैर पटकना तथा बलबलाने की प्रतिक्रिया देखी जा सकती है। बालक की प्रथम इच्छा गोद में लिए रहने की होती है। गोद से उतार कर यदि उसको बिस्तर पर लिटा दिया जाए तो, वह रोने लगता है। अपरिचित व्यक्तियों से बालक में डर (Fear) उत्पन्न हो जाता है। 7 माह का बालक किसी का हाथ पकड़कर हँसता है व मुँह पर हाथ रखने पर प्रसन्न होता है। इसमें उत्साह का उद्भव (उत्सुकता) बालक में 8, 9, 10 माह में हो जाता है। यह आयु अंक इसलिए है क्योंकि विकास में बौद्धिक सामाजिकता पायी जाती है। 11 से 14 महीने की अवस्था में बालक में सहयोग एवं मित्रता का व्यवहार स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ने लगता है। बालक सहारा पकड़कर चलने व खड़ा होने का प्रयास करने लगता है। इस आयु में बालक में पहचानने का विकास हो जाता है। 14 माह की अवस्था तक बालक अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की कोशिश स्वयं करना चाहता है और बालक में सांकेतिक (symbolic) भाषा की समझ विकसित हो जाती है। 15-18 महीने की अवस्था का बालक खेलने में अधिक रुचि लेने लगता है।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, बालक में स्वतंत्रतापूर्वक अथवा स्वच्छन्द खेलने की क्रिया का विकास 18 महीने की अवस्था में हो जाता है। 24 महीने की आयु तक बालक में प्रेम, co-operation, jealousy (ईर्ष्या) heat (घृणा), कलह (quarrel) आदि की भावनाएँ विकसित होने लगती है। शैशवावस्था का बालक मुख्य रूप से स्वप्रेमी एवं स्वकेन्द्रित होता है।

2. Social development in Early (पूर्व बाल्यावस्था में सामाजिक विकास) → बाल्यावस्था सामाजिक विकास का मुख्य आधार होती है। इस अवस्था का प्रसार वैसे 3 से 6 वर्ष तक का होता है। 3 से 6 वर्ष तक प्रकार की ऐसी अवस्था होती है जब शिशु बालक के रूप में अपने परिवार से बाहर निकलता है अर्थात उसका सम्पर्क पास-पड़ोस एवं विद्यालय के मित्रों एवं सहपाठियों से होता है। शैशवावस्था का स्वकेन्द्रित शिशु अब अपने व्यवहार एवं क्रिया के द्वारा दूसरों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करने लगता है।

"Cultivation of mind should be the ultimate aim of human existence." - B.R. Ambedkar

3 से 6 वर्ष की अवस्था में सामाजिक विकास की गति बड़ी तीव्र होती है। बालक का समाज के प्रति दृष्टिकोण विस्तृत हो जाता है, Murphy ने अपने अध्ययनों से यह स्पष्ट किया है कि इस आयु के बालकों में सामूहिक जीवन की प्रबल इच्छा होती है। मित्रों के प्रति Sympathy की भावना अधिक होती है। Jersild (जरसील्ड) महोदय ने स्पष्ट किया कि जिन बालकों को इस अवस्था में खेलने के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध नहीं हो पाते उनमें Aggressive tendency (आक्रामक प्रवृत्ति) का पूर्णतया विकास हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इस अवस्था के बालकों में निम्नलिखित सामाजिक विशेषताएँ दिखाई देती हैं। जैसे—

(1) Sympathy (सहानुभूति)
(2) Imitaation (अनुकरण)
(III) Play (खेल)
(IV) Competition (प्रतियोगिता)
(V) Co-operativeness (सहकारिता)
(VI) Negativeness (नकारात्मकता)
(VII) Teasing (चिढ़ाना या तंग करना)
(VIII) Dominance (प्रभुत्व)
(IX) Lying (झूठ बोलना)
(X) Stealing (चोरी करना)
(XI) Quarrel (कलह)
(XII) Aggression (आक्रामकता)।

(3) Social development in Late childhood (उत्तर बाल्यावस्था में सामाजिक विकास)

सामाजिक विकास की इस अवस्था का प्रसार क्षेत्र 7 से 12 वर्ष होता है। यह अवस्था मुख्य रूप से प्रारंभिक विद्यालय की अवस्था (elementary school period) होती है। उत्तर बाल्यावस्था को सामुदायिक अवस्था भी माना जाता है क्योंकि 'समूह शक्ति' इस आयु की मुख्य विशेषता होती है। विद्यालय में बालक के नये मित्र बनते हैं, उनके साथ उसे समायोजन करना होता है। बालक अपने मित्र-मंडली पर इतना आश्रित

Chitra "You must be the change you want to see in the world." —Mahatma Gandhi

हो जाता है कि उनके खेल संबंधी योजनाएँ भी उनके मित्र ही निर्धारित करते हैं। खेलों में पूर्ण सहभागिता के साथ-साथ बालक अपने विचारों की पूर्ण अभिव्यक्ति करने लगता है, जिससे उनके सामाजिक प्रतिक्रियाओं का क्षेत्र व्यापक हो जाता है। विद्यालय में एक-दूसरे के साथ उठना-बैठना, खेलना-कूदना, पढ़ने-लिखने आदि क्रियाओं से बालक को सामाजिक विकास का पर्याप्त अवसर मिलता है। समूह की मान्यता बालक के लिए घर एवं विद्यालय की मान्यताओं से भी महत्वपूर्ण हो जाती है। समूह निष्ठा के कारण बालक कभी-कभी झूठ भी बोलने लगता है। तथा स्कूल में अध्यापक के दबाव के कारण विरोध भी करने लगता है। इस उम्र के बच्चों को दूसरे लोगों के साथ सम्पर्क बनाये रखने का पर्याप्त अवसर मिलता रहता है। अत: उसकी मित्रता स्थायी रूप ग्रहण कर लेती है। जो बिना किसी छल-कपट, बनावट एवं भेदभाव पर आधारित होने के कारण जीवनपर्यन्त अटूट बनी रहती है।

वास्तव में बालक में पूर्वबाल्यावस्था में जिन सामाजिक गुणों का विकास हुआ रहता है, उत्तर बाल्यावस्था में अधिकांशत उन्हीं गुणों का विकास होता है। उत्तर बाल्यावस्था में यौन चेतना के विकास के साथ ही लड़के एवं लड़कियों में यौन विरोध की भावना अधिक प्रबल होती है। अत: बालक एवं बालिकाएँ अलग-अलग समूह का निर्माण करते हैं। बालक एवं बालिकाओं में विभिन्न रुचियों के विकास के साथ ही sexual विभेद भी पाया जाता है। उत्तर बाल्यावस्था के बालकों में सामाजिक विकास की प्रमुख विशेषता leadership (नेतृत्व) होता है। प्रारंभ में बालक अपनी शक्ति (power) एवं आक्रामक प्रकृति के द्वारा अन्य बालकों पर प्रभुत्व स्थापित करता है। किन्तु आयु वृद्धि के साथ बालक में त्याग, आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, तथा आत्म संयम के गुणों का भी विकास हो जाता है। नेतृत्व की प्रवृत्ति अन्तर्मुखी बालकों / बालिकाओं की अपेक्षा बहिर्मुखी बालक व बालिकाओं में अधिक पायी जाती है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि उत्तर बाल्यावस्था के बालकों में मुख्य रूप से निम्न विशेषताएँ प्रमुखता से दृष्टिगत होती हैं। यथा—

(1) Group loyalty (समूह भक्ति)।